ISSN–2278-5655

AMIERJ AARHAT MULTIDISCIPLINARY INTERNATIONAL EDUCATION RESEARCH JOURNAL

Volume–X, Issues– IV July - August 2021

समाज में कोविद-१९ से हलचल

श्रीमती. रेणुका आनंद परदेशी,

सहायक प्राध्यापक,

विद्या प्रबोधिनी कॉलेज ऑफ़ कॉमर्स ,एजुकेशन ,कंप्यूटर एंड मैनेजमेंट, गोवा

संक्षिप्तिका :-

कोरोना वाइरस वैश्विक महामारी (२०१९-२०२०) की शुरुवात एक किस्म के कोरोना वाइरस के संक्रमण के रूप में मध्य चीन के वुहान शहर में २०१९ के मध्य दिसंबर में हुई | विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोरोना को नया नाम कोविद-१९ दिया | पूरी दुनिया चाइना द्वारा दी गई ईस महामारी से झुंझ रही है | दुनिया भर के वैज्ञानिक और डॉक्टर्स इस बीमारी के इलाज के लिए लगे है | लेकिन अभी तक वैक्सीन या टीका बनने कि पुष्टि किसी भी राष्ट्र द्वारा नहीं कि गई है | इस बीमारी से बचाव के लिए सिर्फ सोशल distancing ही एक मात्र उपाय नज़र आता है | एकत्र रहने वाले ,मिल-जुलकर रहने वाले समाज में कभी ऐसी स्थिति का सामना करना होगा ऐसा कभी किसी ने सपने में भी नहीं सोचा होगा | मानो इस महामरी ने कुछ समय के लिए समाज की परिभाषा ही बदल दी हो | और सामाजिक नागरिक को एक अलग ही तौर-तरीके में रहने के लिए मजबूर कर दिया हो | इस के साथ ही इस बात में दो राय नहीं कि कोविद-१९ ने मानवजाति का जीवन अस्तव्यस्त कर दिया है | जिसके कारण समाज में एक निराशा ,भय ,असुक्षितता का पर्यावरण निर्माण हो गया है | समाज की सभी गतिविधियां थम-सी गई है परिणामस्वरूप इस महामारी का प्रभाव निष्क्रिय समाज के भिन्न- भिन्न क्षेत्रों में दिखाई पड़ता है | यह संशोधन पेपर समाज के इन्हीं क्षेत्रों पर रोशनी डालता है कि किस तरह सामाजिक , शैक्षणिक, आर्थिक, व्यावसायिक , घरेलू हिंसा ,स्थानांतरण,बेरोज़गारी और बढ़ते गुनाह पर इस वैश्विक महामारी अपनी छाप छोड़े जा रहा है और न जाने इससे उभरकर हमें अपना जीवन पटरी पर लाने के लिए कितना समय लग जाए |

कुंजी शब्द :- *सोशल distancing, वैश्विक महामारी, निष्क्रिय समाज*

Aarhat Publication & Aarhat Journals is licensed Based on a work at http://www.aarhat.com/amierj/

परिचय :-

कोविद-१९ इस महामारी ने संपूर्ण विश्व में हलचल मचा दी| १.५ ग्राम से भी कम वजन वाले

इस विषाणु ने संपूर्ण विश्व की अर्थव्यवस्था को औंधे मुंह गिरा दिया | मानव द्वारा निसर्ग का ह्रास जब-जब होगा तब-तब प्रकृति हमें ये संदेश देती रहेगी कि हम प्रकृति से है हम से प्रकृति नहीं |आज क्षण भर में हमारे रहन-सहन के तौर तरीके पल भर में बदल जाएँगे ये हमने कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था | चाइना की विश्व में प्रथम क्रमांक पर रहने की मंशा इतनी क्रूर रही कि उसने संपूर्ण विश्व में मानवता पर निर्दयी वार किया और जिसका उसे ज़रा भी पछतावा नहीं |

इस क्रूर वार का आज मानवजाति को भुगतान करना होगा मानो यही संदेश हमें प्रकृति देना चाहती हो | ये समाज में हो रहें बदलाव हम, सामाजिक क्षेत्र, शैक्षणिक क्षेत्र, अर्थव्याव्स्थता, घरेलू हिंसा और स्थानांतरण और बेरोज़गारी के रूप में देखने को मिलता है |

१.सामाजिक क्षेत्र :-

कोविद-१९ इस वैश्विक महामारी ने जिस तरह कुछ समय के लिए समाज की परिभाषा बदल दी है और हमारे रहन - सहन, उठने- बैठने के तौर - तरीके बदले है उन तौर -तरीकों को अपनाने में ही हम सभी की भलाई नज़र आती है | एक अलग ही नियमों से समाज बंधा-सा जा रहा हैं | मिल-जुलकर रहने वाले समाज ने ३ से ४ महीनों से घरों में बंद होने के लिए विवश कर दिया है | सोशल distancing का विशेष ख्याल रखा जा रहा है| दो गज की दूरी का पालन करने में भी कोई कसर नहीं छोड़ी जा रही है | २० मिनट तक हाथों की सफ़ाई पर जागरूकता के लिए विज्ञापनों का सहारा लिया जा रहा है | मास्क ना पहनकर जाना मनो किसी जुर्म के समान हो गया है | मास्क से लेकर वेंटिलेटर की तयारी में सभी की होड़ लगी हो | sanitizer को अपने साथ रखना और समय - समय पर हाथों को साफ़ करते रहना समय की मांग बन दिखाई पड़ती है | महामारी ने विभिन्न तरीकों से धर्म को प्रभावित किया है और मंदिर, मस्जिद , गुरूद्वारे और चर्च जैसे विभिन्न धर्मों से जुड़े पूजा के स्थल बंद हो गए तथा विभिन्न त्योहारों एवं पर्वों से जुडी तीर्थयात्राओं पर रोक लग गई |

समाज में लोगों में यह भी भावना बनती जा रही है कि आने डेढ़ से दो साल तक पूरी दुनिया कोविद-१९ के खतरे से जूझती रहेगी और उसके बाद भी पुनर्निर्माण और इसके स्थाई प्रभाव निसंदेह कई वर्षो तक महसूस किए जाते रहेंगे |

ISSN–2278-5655
AMIERJ AARHAT MULTIDISCIPLINARY INTERNATIONAL EDUCATION RESEARCH JOURNAL
Volume–X, Issues– IV July - August 2021

२२ मार्च, २०२० को जनता carfew का ऐलान करने के बाद, लॉक डाउन की प्रतिक्रिया को दिए गए समयानुसार रखा गया जिससे कि समाज में इस वैश्विक महामारी के फैलाव को रोका जा सके |

लॉकडाउन प्रतिक्रिया

१. २५ मार्च से१४ अप्रैल २०२० (२१दिन)

२. १५ अप्रैल से ३ मई (१९दिन)

३. ४ मईसे१७ मई (१४दिन)

४. १८ मईसे ३१मई (१४दिन)

सरकार द्वारा समय पर लिए गए ये कदम सराहनीय है |

२.शिक्षण क्षेत्र :-

३ से ४ महीनों से संपूर्ण विश्व सारे क्रियाकलापों को रोककर घरों में बंद है | सभी शिक्षण संस्थाए भी लगभग निष्क्रिय अवस्था में पहुँच चुकी है | कोरोना महामारी से भारत में लगभग ३२ करोड़ छात्रों की शिक्षा प्रभावित हुई है जिसमें १५.८१ करोड़ लड़कियां और १६.२५ करोड़ लड़के शामिल है |वैश्विक स्तर पर इस महामारी से दुनिया के १९३ देशों के १५७ करोड़ छात्रों की शिक्षा प्रभावित हुई है |

ऐसे में शिक्षक और शिक्षार्थी वर्ग को अपने आपको सक्रिय रखने के लिए एक वैकल्पिक व्यवस्थता के रूप में आभासी दुनिया के माध्यम से शिक्षण क्षेत्र को कार्यशील बनाने के अतिरिक्त हमारे पास अन्य कोई विकल्प नहीं रह जाता |यदि शिक्षक और शिक्षार्थी वर्ग निष्क्रिय अवस्था में पहुँच जाएँगे तो उन्हें दोबारा सक्रिय बनाने में कष्ट का सामना करना पड़ सकता है | इस चुनौती को सामने देख दूरस्थ शिक्षण के लिए जो वैकल्पिक साधन उपयोग में लाये जा रहें थे उन्हीं का उपयोग किया जा रहा है | सोशल distancing का ध्यान रखते हुए शिक्षण क्षेत्र को निष्क्रिय अवस्था में जाने से बचाने के लिए यही एक मात्र विकल्प है | हमारे शास्त्रों में भी लिखा गया है कि :- 'आप्पति काले मर्यादा नास्ति ' अर्थात यही आपत्त धर्म है| लॉक डाउन के साथ ही शिक्षा क्षेत्र में एक निराशा क माहोल फ़ैल गया | संपूर्ण भारत में प्राथमिक शिक्षा लेने वाले विद्यार्थी , माध्यमिक और उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों का भविष्य

माने खतरे में नज़र आने लगा था | इसके साथ ही संपूर्ण भारत के शिक्षक वर्ग एक परेशानी और चिंता में डूब गया था | सभी को शिक्षार्थी वर्ग की चिंता सताए जा रही थी |

सारा समाज और प्रत्येक परिवार जहाँ अपने बच्चों को मोबाइल और संगणक से दूरी बनाये रखने के लिए तत्पर रहता था, आश्चर्य है कि आज वही समाज इसी प्रकार के तकनीकी यंत्रों का उपयोग कर अपने बच्चों को शिक्षा देने में इसका उपयोग कर रहा है |

तात्पर्य ये कि हर सिक्के के दो पहलू होते है किसे अपनाना है ये हम पर निर्धारित होता है| आज शिक्षा क्षेत्र में तकनीक का उपयोग किसी वरदान से कम नहीं | इस बात में दो राय नहीं कि प्रत्यक्ष कक्षा में अध्ययन -अध्यापन प्रक्रिया के लिए ये सिर्फ कुछ ही समय के लिए वैकल्पिक साधन है | जो समयानुसार शिक्षण क्षेत्र को कार्यान्वित बनाये रखने में मददगार है| ऑनलाइन शिक्षा के अतिरिक्त इस समस्या का कोई बेहतरीन विकल्प नज़र नहीं आता है | तकनीकी क्षेत्र ही शिक्षा क्षेत्र के लिये ऑनलाइन शिक्षण एक वरदान की तरह साबित होता नज़र आ रहा है | आज भारत और संपूर्ण विश्व में ऑनलाइन शिक्षा के द्वारा ही शिक्षा क्षेत्र को निष्क्रिय होने से बचाया जा सका है | 'वर्क फ्रॉम होम' को अपनाये शिक्षक मानों एक जूनून लिए समाज के शिक्षार्थी वर्ग को निष्क्रिय होने से बचाने में पूरी तरह जुट गया है |

आज शिक्षक और शिक्षार्थी वर्ग के सामने शिक्षण क्षेत्र में कुछ दिए गए अवसर और चुनौतियाँ नज़र आती है :-

अवसर	चुनौतियाँ
तंत्रज्ञान एक वरदान तंत्रज्ञान का उपयोग शिक्षण प्रक्रिया सक्रिय घर बैठे शिक्षा पढाई से जुड़े है,समय का नियोजन हो रहा है | सुरक्षा कवच रचनात्मक कार्यों से जुड़ाव	प्रत्येक छात्र के लिए अनुपयुक्त ग्रामीण छात्रों तक पहुचने में असमर्थ श्रवण क्षमता पर परिणाम क्लासरूम का अभाव ऑनलाइन गेमकी तरफ आकर्षण

ISSN–2278-5655

AMIERJ AARHAT MULTIDISCIPLINARY INTERNATIONAL EDUCATION RESEARCH JOURNAL

Volume–X, Issues– IV July - August 2021

गूगल क्लासरूम , ज़ूम ऐप , मूक , नेप्टेल , जैसे कई कोर्सेज जो पहले से ही एम् एच आर डी द्वारा चलये जा रहें थे , वे सभी कोर्सेज इस समय इस संकट की घड़ी से हमें उभारने में सहायक हो रहें है |

३.अर्थव्यवस्थता :-

कोरोना के कारण समाज के सभी क्षेत्र निष्क्रिय अवस्था में पहुच चुके है जिसका परिणाम अर्थव्यवस्था पर निम्न प्रकार से देखने को मिलता हैं :-

- कोस डाउन शटर के रूप में आर्थिक गतिविधि का नुकसान.
- लोगों को नौकरी खोने के कारण आय का नुकसान.
- वैश्विक बंद के कारण निर्यात में गिरावट.
- कई क्षेत्रों में उत्पादन में व्यवधान (disruption).
- FY21 की जीडीपी वृद्धि में 1 प्रतिशत की कमी आ सकती है.

डन एंड ब्रैडस्ट्रीट (Dun & Bradstreet) के नवीनतम अर्थव्यवस्था पूर्वानुमान के अनुसार, मंदी की स्थिति में आने वाले देशों और दिवालिया होने वाली कंपनियों में प्रवेश करने की संभावना बढ़ गई है और भारत वैश्विक मंदी से "विघटित" रहने की संभावना नहीं है.

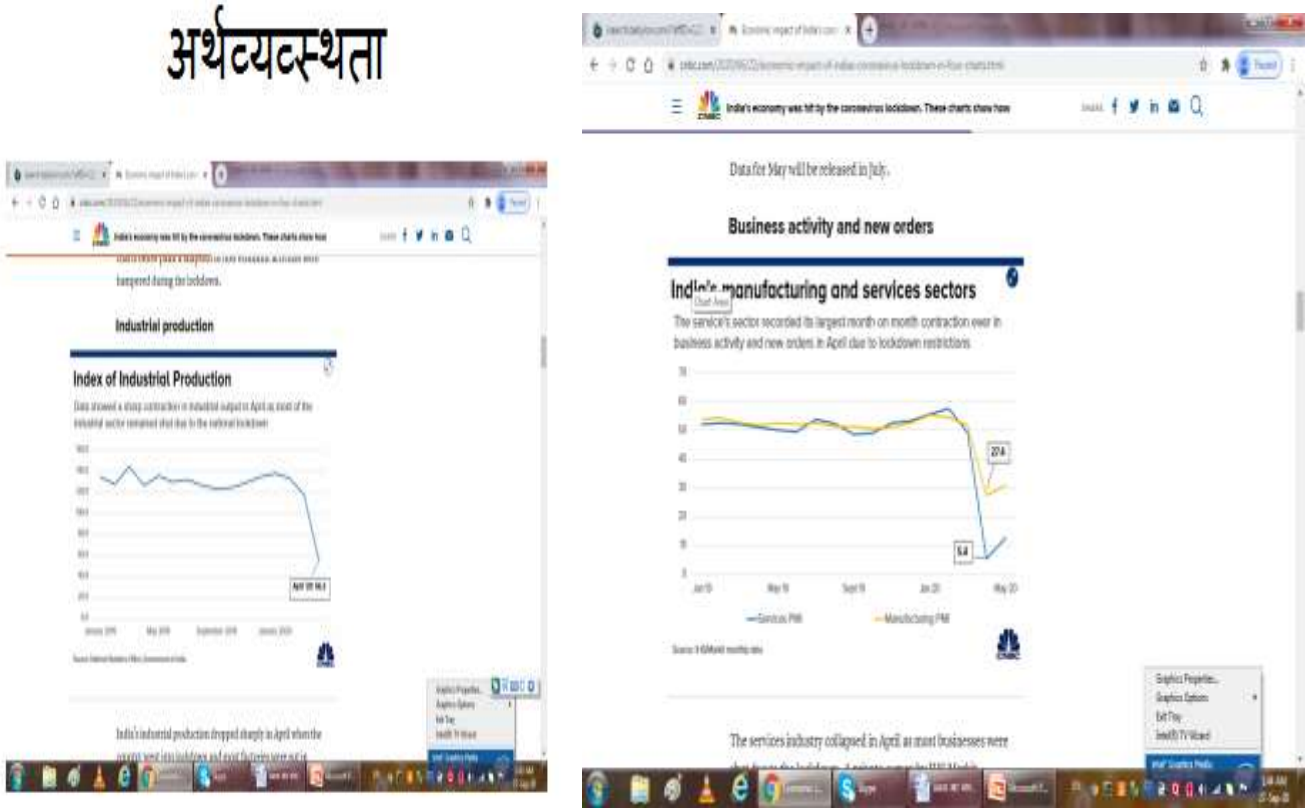

ISSN–2278-5655

AMIERJ AARHAT MULTIDISCIPLINARY INTERNATIONAL EDUCATION RESEARCH JOURNAL

Volume–X, Issues– IV July - August 2021

ऊपर दिए गए ग्राफ से पता चलता है कि उद्योग, उत्पादन और बेरोजगारी का प्रमाण किस तरह से कोरोना काल में घट गया |

भारतीय रिज़र्व बैंक ने अपनी रिपोर्ट में कहा कि कोविद-१९ के भारत पर पड़े आर्थिक का सही आंकलन करना मुश्किल है | इसकी वजह यह है कि भारत में अभी कोरोना वायरस का संक्रमण तेज़ी से बढ़ रहा है | अरबीआई ने कहा है कि देश में अभी कोरोना संकट की वजह से नयी -नयी स्थितियां उभर रही हैं|

४.मानसिकता पर परिणाम :-

कोरोना काल में समाज में मानसिक परिणाम मुख्न तीन स्तर पर देखने को मिलते हैं :-

१.बालकोंपरपरिणाम

२.युवाओंपरपरिणाम

३.बड़ेबुजुर्गोंपरपरिणाम

कोविद-१९ के कारण समाज के विभिन्न स्तरों पर इसके परिणाम देखने को मिलते है | बच्चों की बात की जाए तो वे मार्च महिने से ही अपने-अपने घरों में बंद है | वृद्ध अवस्था में एक अलग ही प्रकार का भय दिखाई देता है | युवा पीढ़ी में एक चिंता का आभास होता है | बच्चों के साथ समय व्यतित कर उनके मनोरंजन के कुछ इंतजाम कर उन्हें स्वस्थ रखा जा सकता है | वृधावस्था वालों के लिए रोगप्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए समय समय पर

संतुलित आहार और उन्हें व्यायाम द्वारा मन स्वस्थ रखने में मदद कि जा सकती है | युवा पीढ़ियों में इस वैश्विक महामारी से सावधानी और जागरूकता लाकर मदद कि जा सकती है |

४.घरेलू हिंसा :-

लॉक डाउन के चलते जहाँ एक और राष्ट्र वैश्विक महामारी से झुंझ रहा है वही परिवारों में नौकरी छूटने के कारण आर्थिक व्यवस्था की चपेट में आये परिवारों में घरेलू हिंसा के मामले भी सामने आया है |

WHO के अनुसार घरेलु हिंसाओं के हालात कुछ इस तरह देखने को मिलते है|

जबकि भारत में नासा नेशनल लीगल सर्विस अथॉरिटी द्वारा इन केसेस में तेजी से बढत नज़र आती है | इन आंकड़ों के अनुसार दो महिने के लॉक डाउन के समय घरेलू हिंसा में सबसे ज्यादा मामले उत्तराखंड के है , दुसरे क्रमांक पर हरयाणा के मामले और तीसरे क्रमांक पर हमारी राजधानी दिल्ली है |

नीचे दी गई तालिका द्वारा हमें चित्र साफ़ - साफ़ नज़र आएगा :-

क्रमांक	शहर	घरेलू हिंसा के मामले
१.	उत्तराखंड	१४४
२.	हरयाणा	७९
३.	दिल्ली	६९

दी गई जानकारी नासा द्वारा संदर्भित मामले लॉक डाउन की शुरुवात से मई १५,२०२० तक की जानकारी २८ राज्यों से स्टेट लीगल सर्विसेज द्वारा दी गई (एसएलए) है|

ये सिर्फ भारत ही नहीं संपूर्ण विश्व में भी घरेलू हिंसा के मामले सामने आये | इन मामलों में बढोतरी के मुख्य कारण परिवार में होने वाली बेरोज़गारी है, जिसके रहते परिवार में निराशा

ISSN–2278-5655
AMIERJ AARHAT MULTIDISCIPLINARY INTERNATIONAL EDUCATION RESEARCH JOURNAL
Volume–X, Issues– IV July - August 2021

और फिर तनाव और परिवार में पैसो की तंगी है | आज भारत ही नहीं विश्व में भी इस महामारी के प्रभाव से बेरोज़गारी में वृद्धि हुई है जिसके परिणामस्वरूप घरेलू हिंसा पर भी इसके परिणाम देखे जा सकते है |

५.बेरोजगारी और स्थानांतरण :-

कोरोना वायरस के कारण देश में लगे लॉकडाउन की वजह से बेरोजगारी दर में उछाल आया है। सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकोनॉमी (सीएमआईई) ने देश में बेरोजगारी पर सर्वे रिपोर्ट जारी किया है। इस सर्वे रिपोर्ट के अनुसार तीन मई को समाप्त हुए सप्ताह में देश में बेरोजगारी दर बढ़कर 27.1 फीसदी पर पहुंच गई है।

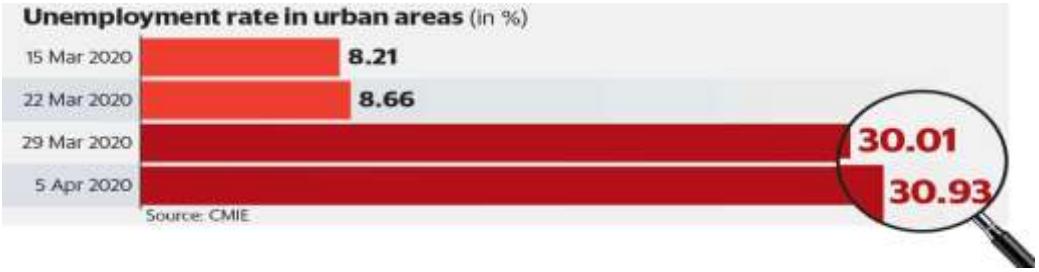

अप्रैल के अंत तक, दक्षिण भारत के पुदुचेरी में सबसे अधिक 75.8 प्रतिशत बेरोजगारी थी, उसके बाद पड़ोसी राज्य तमिलनाडु में 49.8 प्रतिशत, झारखंड में 47.1 फीसदी और बिहार में यह आंकड़ा 46.6 प्रतिशत था। महाराष्ट्र की बेरोजगारी दर सीएमआईई द्वारा 20.9 प्रतिशत आंकी गई थी, जबकि हरियाणा में 43.2 प्रतिशत, उत्तर प्रदेश में 21.5 प्रतिशत और कर्नाटक में 29.8 प्रतिशत थी।

सीएमआईई ने अनुमान लगाया गया है कि अप्रैल में दैनिक वेतन भोगी श्रमिकों और छोटे व्यवसायी सबसे ज्यादा बेरोजगार हुए हैं। सर्वे के अनुसार 12 करोड़ से ज्यादा लोगों को नौकरी गंवानी पड़ी है। इनमें फेरीवाले, सड़क के किनारे सामान बेचने वाले, निर्माण उद्योग में काम करने वाले कर्मचारी और कई लोग हैं जो रिक्शा को ठेला चलकर गुजारा करते थे।

लॉक डाउन के चलते राष्ट्र की आर्थिक व्यवस्थता औंधे मुंह आ गिरी है | जिस कारण बहुत से कर्मचरियों को नौकरी से निकल दिया गया | आर्थिक व्यवस्थता ही तीतर -बितर हो गई जिस कारण कर्मचारी और मजदूरों को नकरी रहित होने के कारण , भुखमरी का सामना करना पड़ रहा है | ऐसी स्थिति हो गई की बहुत से मजदूरों के पास जब खाने के लिए ही सही बंदोबस्त नहीं ऐसे में वो अपने घर का किराया कैसे दे | ऐसी अवस्था में इन मज्दुरों ने

अपने घर की राह पकड़ ली | और मुंबई , भोपाल ,पुणे अलग अलग शहरों से ये मजदूर पैदल ही अपने- अपने घरों की और निकल पड़े | भूख ,प्यास की चिंता छोड़ ये हजारों मिलो का रास्ता पार करने के लिए निकल पड़े |

लॉक डाउन के चलते देश के अधिकांश हिस्सों में सीमाये बंद है | जिस कारण इसके द्वारा लिए गए अभूतपूर्व कदम, कुछ समाज के ताने-बाने को तोड़ रहें है और कई अर्थव्यवस्थताओं को बाधित कर रहें है | देश के अलग-अलग हिस्सों में काम करने वाले मजदूरो को घर की राह के आलावा और कोई राह नजर नहीं आई | भूख और हाथ से छुटी नौकरी ने उन्हें ये कदम उठाने पर मजबूर कर दिया इसके फलस्वरूप बड़े पैमाने पर लोगों की नौकरियां छूट रही है और भूख की छाया बढ़ रही है |और श्रमिक वर्ग स्थानांतरण के लिए विवश है | ऐसे में उत्तर प्रदेश(श्री. आदित्यनाथ योगी जी) सरकार के फैसले सराहनिय है | ऐसी समस्याओं के लिए सरकार द्वारा नीतियाँ ही दो समय कमाकर अपना पेट भरने वाले श्रमिकों के लिए निश्चय ही सहायक होंगी |

स्थानांतरण :-

कोरोना काल के कारण पूरे राष्ट्र में उद्योग धंधो के बंद के कारण ४०मिलियन लोगोंको अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ा| उत्तरप्रदेश ,बिहार ,राजस्थान ,मध्यप्रदेश,मुंबई, दिल्ली और देश के विभिन्न राज्यों से मजदूरों को घर की और जाने की होड़ मच गई |

राष्ट्र में बंदी के चलते मजदूरों, और विभिनन क्षेत्र के कर्ममचारियों को अपने-अपने घरों की ओर रूख करना पड़ा | वेतन और भविष्यकी चिंता साथ लिए ये अपने घरों की और निकल पड़े |घरकी औरवापसी के चलते ३००से ज्यादा मजदूरोंकी भूखमरी के चलते मौत हो गई |राज्य और केंद्र सरकार की मदद समय-समय पर दी गई |वर्ल्ड इकनोमिक फोरम अनुमान १३८ मिलियन तक स्तानांतरण का प्रमाण दर्ज किया गया |

बढ़ते गुनाह:-

तनाव,बेरोजगारी, स्थानांतरण के कारण समाजमें गुनाहमें भी बढ़ोतरी दिखाई देती है |काम ना होने के कारण, भूखमरी से निपटने के लिए चोरी –डकैती, राह चलते व्यक्तिके गले से चैन खींचना,जैसी घटनाएँ आये दिन समाचार पत्रोंमें पढ़ने को मिल रही हैं |

समापन

करोना काल का यह समय सचमें किसी अग्निपरीक्षा से कम नहीं जान पड़ता ऐसे समयमें फिर भी हम भारतवासियोंने जो संयम दिखाया है वह सराहनिय हैं |ऐसे संघर्ष के समयमें भी भारतने 'वासुदेवकुटुम्बकम' का प्रमाण दिया है | (विदेशी राष्ट्रोंको बिनाभेद-भाव किए दवाई पहुंचाईहैं |) हमारा घरोंमें महीनों तक रहना सोशल distancing में रहना ,इस बातका प्रमाण है कि हम समाज और राष्ट्रके लिए कर्तव्यनिष्ठ और एक जिम्मेदार नागरिक की भूमिका निभा रहें हैं |

संदर्भ सूची :-

https://www.weforum.org
https://www.worldbank.org
www.thehindu.com
www.punjabkesari.in
m.economictimes.com/hindi/news/diificult-to accurately-access-the-economic-impact-of-kovid-19
wikipedia